संविधान दिवस पर उद्देशिका वाचन एवं संगोष्ठी

दिनांक : 26.11.2021

वन पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार के आदेश एवं भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून के निर्देश पर वन उत्पादकता संस्थान, रांची द्वारा संस्थान के निदेशक के नेतृत्व में भारतीय संविधान के अनुपालन हेतु संस्थान के वैज्ञानिकों, अधिकारियों, कर्मचारियों तथा शोधकर्मियों द्वारा दिनांक 26.11.2021 को पूर्वाह्न 11.00 बजे संविधान की उद्देशिका का वाचन कर अनुपालन का संकल्प लिया गया तथा अपराह्न 4.00 बजे आजादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत संविधान दिवस के अवसर पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमे समस्त अधिकारियों, कर्मचारियों ने भाग लिया। संकल्प सभा में संस्थान के निदेशक डा. नितिन कुलकर्णी ने संविधान की प्रस्तावना का वाचन किया जिसे समस्त कर्मचारियों ने अनुसरण करते हुए वाचन किया एवं संविधान में आस्था रखने का संकल्प लिया।

अपराह्न 4.00 बजे आयोजित संगोष्ठी का संचालन संस्थान की वैज्ञानिक श्रीमती रुबी सुसाना कुजूर ने किया। कार्यक्रम का संचालन करते हुए उन्होने कार्यक्रम की संक्षिप्त जानकारी दी एवं बताया कि आज के इस कार्यक्रम में विभिन्न प्रतिभागियों द्वारा संविधान में नागरिकों के अधिकार एवं कर्तव्य विषय पर व्याख्यान एवं चर्चा की जायेगी।

इस अवसर पर संस्थान के सुश्री मीनाक्षी तिवारी, श्री संजय पाल कुजूर, श्री अभिमन्यु कुमार गौड़, श्री करम सिंह मुण्डा, श्री मुकेश कुमार एवं सुश्री एरम एहसान ने संविधान में नागरिकों के अधिकार एवं कर्तव्य पर अपने विचार रखे।

संस्थान के समुह समन्वयक अनुसंधान डा. योगेश्वर मिश्रा ने सिपाही विद्रोह 1857 से लेकर 2017 के संविधान संसोधन (GST Bill) का इतिहास बताते हुए भारतीय संविधान की विशेषता का क्रमिक विश्लेषण किया। संविधान प्रदत्त नागरिकों के अधिकार एवं कर्तव्य की विवेचना करते हुए संविधान के प्रादुर्भाव, निर्माण प्रक्रिया,

संविधान निर्माताओं के योगदान एवं दूरदर्शिता, संविधान संसोधन के प्रावधानों को बड़ी बारीकी से उल्लेख किया। उन्होने श्री बी.एन.राव के योगदान की भी चर्चा की। वित्तीय आपात की चर्चा करते हुए अमेरिका की मंदी का रोचक कहानी का उदाहरण भी दिया। उन्होने संविधान के प्रति जागरुकता कार्यक्रम चलाने पर बल दिया।

अपने अध्यक्षीय संबोधन में संस्थान के निदेशक डा. नितिन कुलकर्णी ने 1857 से 1947 तक के उन सभी विभूतियों को नमन किया जिसके बदौलत देश को आजादी मिली एवं अपना संविधान मिला। अनेकता में एकता वाले देश को संविधान किस प्रकार एक जुट रखकर देश के विकास में सहायक है, खूबसूरती से व्याख्या किया। कुच देशों का धार्मिक हो जाना, कुछ का दिवालिया हो जाना जैसी घटनाओं की चर्चा करते हुए बताया कि भारत की इतनी विविधता को बांधकर रखने वाले संविधान निर्माताओं को नमन करते हुए याद करना आवश्यक है। संविधान के विभिन्न संशोधनों की चर्चा करते हुए उन्होने बताया कि इसकी मूल भावना को बनाए रखना और उसके अनुसार आचरण करना हम सब का कर्तव्य है। दुनियां का सबसे बड़ा संविधान एवं सबसे बड़े लोकतंत्र वाले देश के नागरिकों के लिए जो अधिकार एवं कर्तव्य की विवेचना की गई है वह किसी और संविधान में अप्राप्त है। उन्होने जोर देकर कहा कि हमे मानसिकता में बदलाव कर एक दूसरे का आदर करने, आपस में समझौता कर समस्या का निदान करने की प्रवृति को बढ़ावा देना होगा। अपने कर्तव्य को सामने रखकर अधिकार की बात करने की प्रवृति को लाना होगा। अधिकार के प्रति सजग रहते हुए कर्तव्यों का निर्वाहन करना आवश्यक है। दूसरों के अधिकारों का सम्मान करना ही संविधान के प्रति सच्ची निष्ठा बताते हुए उन्होने कहा कि एक दूसरे को साथ लेकर चलने की मानसिकता में अभी भी कमी है जो विकास में बाधक है। उन्होने भी संविधान निर्माताओं को नमन करते हुए संविधान के प्रति जागरुकता के सामूहिक प्रयास पर बल दिया। उन्होने बताया कि आपसी सहमति से समस्या का निदान निकालने से न्यायपालिका पर दबाव कम किया जा सकता है। पर्यावरण अनुसंधान स्टेशन, सूकना, दार्जीलिंग, पश्चिम बंगाल में भी केंद्र प्रभारी श्री पी.सी.लकड़ा की अगुवाई में केंद्र के समस्त कर्मचारियों द्वारा संविधान दिवस के अवसर पर संविधान की उद्देशिका का वाचन किया गया एवं संविधान अनुपालन का संकल्प लिया गया।

श्री करम सिंह मुण्डा द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के बाद राष्ट्रीय गान के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

कार्यक्रम को सफल बनाने में विस्तार प्रभाग के श्री बी.डी.पंडित, सूरज कुमार, सूचना तकनीकी के श्री निसार आलम एवं बसंत कुमार तथा श्री सुशीत बैनर्जी का सराहनीय योगदान रहा।

आयोजित वाचन कार्यक्रम की झलकियां

आयोजित वाचन कार्यक्रम की झलकियां

आयोजित वाचन कार्यक्रम की झलकियां

आयोजित वाचन कार्यक्रम की झलकियां

आयोजित कार्यक्रम की झलकियां

आयोजित संगोष्ठी की झलकियां

आयोजित संगोष्ठी की झलकियां

आयोजित संगोष्ठी की झलकियां